मगध का उदय

राजनीतिक दृष्टि से ई० पू० छठी शताब्दी में उत्तर भारत कई महाजनपदों और जनपदों में बंटा हुआ था। समकालीन साहित्य 'अष्टाध्यायी', अंगुत्तरनिकाय, भगवतीसूत्र में इनका विस्तार से उल्लेख मिलता है। साहित्य से यह भी जानकारी मिलती है कि उस समय 16 महाजनपदों में मगध, वत्स, कोशल और अवंति के अत्यधिक शक्तिशाली महाजनपद थे, इन चारों में आपसी संघर्ष था। इस संघर्ष में मगध विजयी रहा और एक शक्तिशाली साम्राज्य बन कर उभरा। आरंभ में ऐसा माना जाता रहा कि जिस प्रकार बौद्ध और जैन धर्म क्रमशः महावीर और बुद्ध के अस्तित्व की उपज थी उसी प्रकार मगध साम्राज्य का निर्माण इन महत्वाकांक्षी मगध शासकों की सैनिक एवं कूटनीतिक सफलता का परिणाम था। लेकिन मगध साम्राज्य के सफलता की व्याख्या ऐसे भौतिक परिवेक्ष्य में किया जाना चाहिए और फिट शासकों की भूमिका को इन कारकों से जोड़कर देखा जाना चाहिए।

मगध के राजधानियों की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति मगध की सफलता को ठोस आधार प्रदान किया। मगध की राजधानी राजगृह विभिन्न पहाड़ियों से घिरी हुई थी। मगध की दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र गंगा, गंडक और सोन नदियों के संगम पर स्थित एक जल दुर्ग के समान था। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण वह न केवल शत्रुओं के सीधे आक्रमण से बची रह सकती थी बल्कि लम्बे समय तक आक्रमण का प्रतिरोध भी कर सकती थी।

लौह भण्डार की दृष्टि से भी मगध बहुत अच्छी स्थिति में था। इस क्षेत्र के उपलब्ध लोहे के भण्डार का उपयोग अस्त्र-शस्त्र के निर्माण तथा कृषि उपकरणों के निर्माण में सफलता पूर्वक किया गया। लौह उपकरण के सहयोग से कृषि उत्पादन में काफी बढ़ोतरी हुई और उन्नत कृषि ने मगध के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लोहे से निर्मित

पुष्यमित्र ने मगध की सैनिक शक्ति को मजबूती प्रदान किया।

मगध की दूसरी राजधानी पाटलीपुत्र चारो ओर से नदियों से घिरी हुई थी। साथ ही मगध क्षेत्र में नदियों की बहुलता देखी जा सकती है। इन नदियों ने यातायात को सुगम बना दिया, जिससे वाणिज्य-व्यापार को प्रोत्साहन मिला। फिर यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से भी उन्नत था। आरंभिक आहत मुद्रा के ढेर इन्हीं क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं।

मगध क्षेत्र के जंगलों में हाथीयों एवं लकड़ीयों की बहुलता थी। हाथीयों की उपलब्धता के कारण एक अच्छी राजसेना स्थापित हुई और अधिक लकड़ीयों के कारण निर्माण कार्य को प्रोत्साहन मिला।++

मगध के उदय में वहां के लोगों के सामाजिक तत्परता तथा इनका किसी विरोधी सेना जैसे कारक भी महत्वपूर्ण थे, क्योंकि मगध का क्षेत्र आर्य संस्कृति के प्रभाव से बाहर रहा था इसलिए इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की दृष्टि रूढ़ी मुक्त थी तथा उनमें प्रसार की अदम्य इच्छा थी।

मगध के उत्थान में वहां के महत्वाकांक्षी शासकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। महावंश के अनुसार बिम्बसार 15 वर्ष की आयु में शासक बना। उसने सैनिक विजयों के माध्यम से मगध साम्राज्य का विस्तार किया। उसने अंग के शासक ब्रह्मदत्त को पराजित कर अंग को मगध में मिला लिया। उसने 16 वीं तथा 17 वीं शताब्दी के यूरोपीय शासकों की तरह वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से अपनी सैनिक और कूटनीतिक स्थिति को मजबूत किया। उसने कोशल, वज्जि संघ, मद्र देश तथा विदेह क्षेत्र से वैवाहिक सम्बन्ध कायम किया। कोशल के

राजकुमारी कौशल्यादेवी से विवाह करने पर उसे काशी दहेज के रूप में मिला। दूसरी तरफ अवंति के शासक चन्द्रप्रद्योत तथा वत्सराज्य के शासक से उसके कूटनीतिक संबंध थे। उसने प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से मगध साम्राज्य के आधार को मजबूत किया। उसने भूमि की पैमाईस कराई तथा भू-राजस्व व्यवस्था में सुधार किया। बताया जाता है कि उसने 80 हजार ग्राम भोजकों की सभा बुलाई थी। सबको वश कर उसने रथाई सेना का निर्माण किया, यह वजह है कि उसे क्षेत्रिक विम्बसार कहा जाता है।

अजातशत्रु ने अपने पिता की साम्राज्यवादी नीति को आगे बढ़ाया। उसने 16 वर्ष के निरंतर प्रयास के बाद वज्जिसंघ को मगध साम्राज्य में मिला लिया, साथ ही कौशल क्षेत्र पर भी विजय प्राप्त की।

पुराणों से हमें जानकारी मिलती है कि शिशुनाग जब मगध का सम्राट बना तो उसने प्रद्योत वंश की सेना को नष्ट कर दिया। उसने अवंति के साथ 100 वर्षों की प्रतिस्पर्द्धा को समाप्त कर अवंति को मगध साम्राज्य में मिलाने में सफलता पायी।

नंद वंश पहला ऐसा राजवंश था, जिसने बिम्बसार और अजातशत्रु के द्वारा डाली गयी नींव पर प्रथम वृहत मगध साम्राज्य की स्थापना की। महापद्मनंद के काल तक मगध साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में व्यास नदी से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक फैल चुका था। नंदों के बाद महापद्मनंद ने कलिंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया। नंदों के महत्व में मगध साम्राज्य का इतना उत्थान हुआ कि आगे चल कर इस पर मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई।

Scanned with CamScanner